समाज विकासमाला

जंगल की सैर

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : २

जंगल की सैर

जंगल के पशु-पक्षी तथा पेड़ों का रोचक परिचय
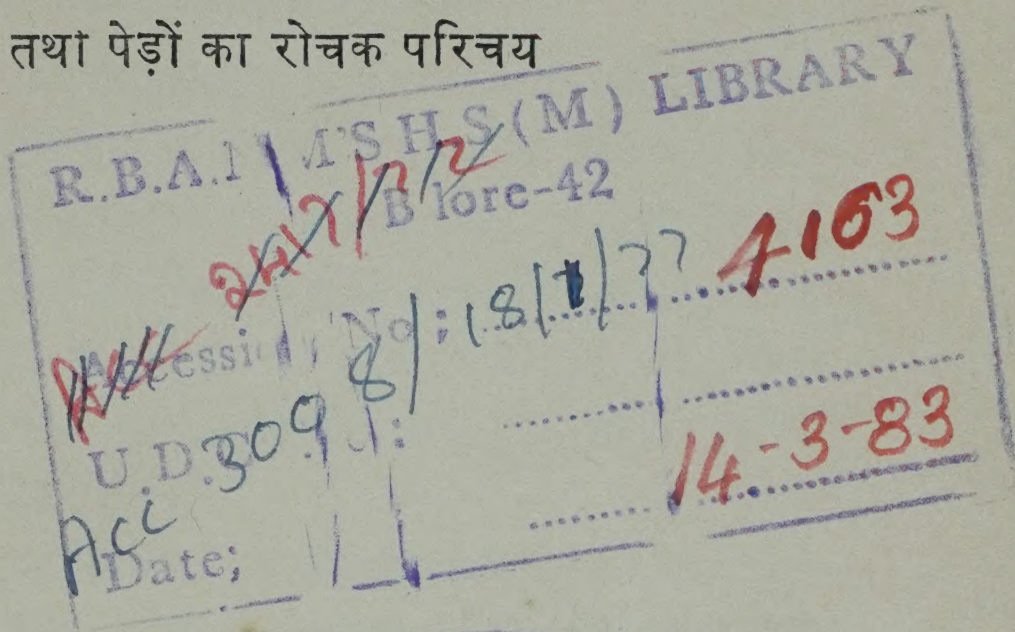
संग्राहक

रामचन्द्र तिवारी

संपादक

यशपाल जैन
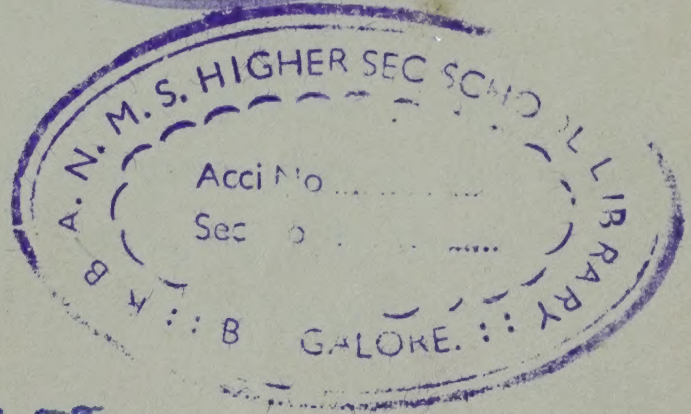
१९५८

सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

चौथी बार : १९५८

मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
सुरेंद्र प्रिंटर्स प्राईवेट लि०
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा। बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

इस पुस्तक-माला को हमने इन्हीं बातों को सामने रखकर चालू किया है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा-शैली, विषय और छपाई में पाठकों को सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

चौथा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का चौथा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसन्द आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनन्द होता है। हमें विश्वास है कि इन सहायक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री
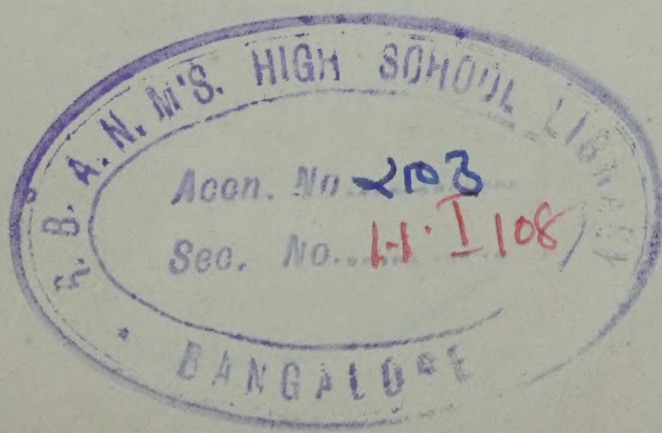
पाठकों से

लीजिए, इस किताब में बाघ की खोज में जंगल को सैर कर लीजिये। वहां आपको खुली हवा का आनन्द मिलेगा। तरह-तरह के पेड़ मिलेंगे। भाँति-भाँति के जंगली जानवर मिलेंगे। डरें नहीं! रमेश आपके साथ रहेंगे।

जंगल की सैर का अपना आनन्द है। उससे भी बढ़कर आनन्द है वहां की चीजों को आंखें खोलकर देखने और समझने में। इस किताब की कहानी को पढ़ते-पढ़ते आप जंगल के बारे में बहुत-कुछ सीख लेंगे।

पहली किताब में आपने बद्रीनाथ-तीर्थ की यात्रा की। इसमें जंगल की सैर की। तीसरी किताब में हम आपको एक ऐसी कहानी सुनायंगे, जिसे सुनकर आपके रोंगटे खड़े हो जायंगे।

ये सब किताबें अपने पास जरूर रखिये। स्वयं पढ़िये। दूसरों को भी पढ़वाइये।

—सम्पादक
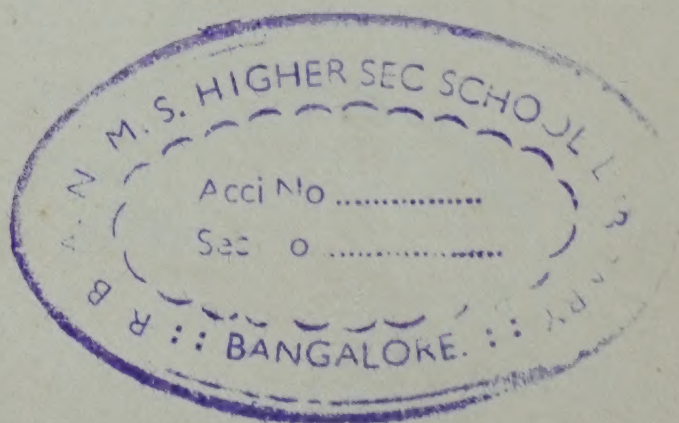
जंगल की सैर

: १ :

रमेश फौज से लौटा तो नगले में ठहरा। वह नगले में रह गया। नगला पहाड़ की तलहटी में था। उसके चारों ओर घना वन था, वन में वनैले पशु थे। खरगोश, हिरन, सूअर, सेही, भालू, गीदड़, तेंदुवा और बाघ। सिपाही वह था। अब शिकारी बन गया। शिकार

रमेश वन में

में उसे जंगली जानवरों से पाला पड़ा। उसने उनको जाना। यह भी जाना कि वन का राजा वहां शेर नहीं,

चीता है, बाघ है——चमकदार लाल-लाल बालों पर काली धारियोंवाला बाघ।

रमेश वन में जा रहा था। पेड़ चुप खड़े थे। झाड़ियां मौन थीं। बेलें सिमटी-सिमटी, हवा बहुत धीरे-धीरे चल रही थी, जैसे सभी बाघ के डर से डरे हुए हों।

रमेश संभल-संभल कर पैर रख रहा था। दुनाली उसके हाथ में थी। वह झाड़ियों के झुरमुट से निकला, उसने घूमती पगडंडी को दूर तक देखा और पास के टीले की ओर बढ़ा। इस टीले के दूसरी ओर नाला था। यह नाला बरसात में पानी से भर जाता था और गरमी में सूख जाता था। नाले के दूसरी ओर झाड़ियां थीं। चौड़ी साफ जगह थी। आगे झाड़ियों और पेड़ों का राज था।

झाड़ी-झाड़ी में मौत थी। वह किसी में से भी निकलकर सामने आ सकती थी। रमेश अपनी आंखों से नहीं, नाक और कानों से भी देख रहा था। हवा में उड़नेवाली बू को पहचान रहा था। अपने चारों ओर होनेवाली हर आहट को जांच रहा था। इस वन में जीना था तो सावधान रहना बहुत जरूरी था।

अचानक उसके कान खड़े हुए। पलकें उठीं। पैर रुके। शरीर तन गया। हाथ दुनाली पर तैयार हो गये। उसने देखा, नाले के दूसरी ओर एक कौवा धरती पर से उड़ा

और पास के पेड़ की सूखी डाल पर बैठ गया। उसने पेड़ की छाल से अपनी चोंच पोंछी।

रमेश समझ गया कि झाड़ी के पीछे कोई पशु मरा पड़ा है। यह कौवा वहीं भोजन करके आया है। कौवे और गीध वन में होनेवाली ऐसी घटनाओं का पता देते रहते हैं। रमेश टीले पर और ऊँचा चढ़ा। देखा, नाले के दूसरी ओर झाड़ियां हैं। उनके बीच कुछ खाली जगह है। वहां हिरन के सींग हैं। पर वे जीते हिरन के सींग नहीं हो सकते। तो वहां किसी जानवर ने हिरन का शिकार किया है! वह और ऊंचा चढ़ा। पता चला कि हिरन आधा खाया हुआ है।

रमेश उस वन के बहुत-से जानवरों को पहचानता था। यह काम किसका है? वह रुककर हिरन के शरीर के चारों ओर देखने लगा। शायद वह जानवर अपना कोई निशान छोड़ गया हो, शायद वह बचे हुए हिरन को खाने के लिए लौटकर आये। इसी समय उसने एक पशु देखा। इस पर उसकी नजर अबतक नहीं पड़ी थी। यह एक वनेला सूअर था, जो घास की जड़ खोद रहा था और मरे हुए हिरन से कुछ दूर था।

सूअर जड़ खोदता रहा। हवा में तेजी आई तो उसे कुछ शक हुआ। उसने अपनी थूथनी उठाई। गंध ली,

उसका शक बढ़ा। वह थोड़ी दूर बाईं ओर गया। थूथनी उठाकर हवा को सूंघा। वापस लौटा। दाहिनी ओर गया और फिर थूथनी उठाकर हवा को सूंघ वापस लौट आया। यहां सबसे अधिक गंध आ रही थी। वह आगे बढ़ा। फिर जड़ खोदना छोड़ वहां से चला गया।

सूअर ने जो-जो किया उसे देखकर रमेश समझ गया कि हिरन को मारनेवाला जानवर बाघ है। यह कौन-सा बाघ है। इस बड़े और घने वन में वह कई बाघों को जानता है। वे भी शायद उसे जानते हैं। पर यह बाघ कौन-सा है ? उसने वन में एक छोटे बाघ के पैर के निशान

हिरन आये और ठिठककर रह गये !

देखे हैं। यह बाघ अपनी माँ से अभी अलग हुआ है। उम्र कोई साल भर की है। तो इस हिरन को इस छोटे

बाघ ने मारा है ? वह ठहरेगा और देखेगा।

रमेश एक पेड़ के तने का सहारा लेकर खड़ा हो गया। उसने देखा कि हवा के रुख के ऊपर की ओर से दो हिरन आ रहे हैं, बड़े संभल-संभल कर, सामने देखते। वे ठीक उसी ओर आगे बढ़ रहे थे जिधर वह हिरन मरा पड़ा था। खून की गंध उन तक नहीं पहुंच रही थी। ऐसा मालूम होता था कि वह जानते हैं कि यहाँ बाघ ने हिरन का शिकार किया है। वे थोड़ा आगे आये, ठिठके और वापस लौट गये।

रमेश ने समझा कि जो हिरन मारा गया है वह इनका साथी था। जब वे इस ओर से जा रहे थे तो बाघ ने उन पर हमला किया और उनके एक साथी को मार लिया। पर यह बाघ कौन-सा है ? नहीं, यह किसी बड़े बाघ का शिकार है। वह यहां लौटकर नहीं आयगा। तब उसे चल देना चाहिए। पर वह जा नहीं सका। उसकी आंखें हिरन के दोनों सींगों की ओर लगी रहीं।

दूर नाले में पत्थर लुढ़कने की आहट हुई। पहाड़ी पर पत्ते खड़के। वन के एक कोने से भैंस के रंभाने की आवाज उठी। रमेश होशियार हो गया। उसने अपने चारों ओर देखा और फिर नाले की दूसरी ओर। सामने दो झाड़ियों के बीच से बाघ निकला चला आ रहा था।

बाघ के कान शरीर से कुछ उभरे हुए थे। बालों पर लाली की चमक तेज नहीं थी। वह बाघ छोटा था।

रमेश ने उसे घूर कर देखा। उसके हाथ में दुनाली है। बाघ सामने निशाने पर है। पर उसने दुनाली उठाई नहीं। वह बाघ को देखता रहा। उसका दिल भर आया। कितनी बड़ी भूल की है इस बाघ ने। वन में वही अकेला शिकारी नहीं है और भी बहुत-से हैं। बाघ इतना भी नहीं जानता कि अधखाये शिकार के पास लौटकर आना मौत में मुंह में जाने के बराबर है।

बाघ हिरन के पास पहुंच गया था। वह उसमें दांत धंसाने ही वाला था कि रमेश ने दुनाली सीधी की। गोली बाघ के सिर के ऊपर पेड़ के तने से टकराई। बाघ उछल कर भाग गया। दुनाली की दहाड़ वन में गमक कर ऊपर उठ गई।

: २ :

रमेश को इस बाघ में रुचि हो गई। उसने उसके पैरों के निशानों को देखा। उसके आने-जाने के रास्तों को जाना। उसने पता लगा लिया कि यह छोटा बाघ एक गिरे हुए पुराने पेड़ के मोटे तने में रहता है। इस तने के खोखले में पहले तेंदुओं का एक जोड़ा रहता था। इसने उनको वहाँ से निकाल दिया है और खोखले

पर अधिकार जमा लिया है। रमेश समझ रहा था कि वह इस बाघ के बारे में सबकुछ जानता है। पर यह उसकी भूल थी। इसका पता उसे थोड़े ही दिनों में लग गया।

एक दिन रमेश उधर से निकल रहा था। उसकी नजर गिरे हुए पुराने तने की ओर गई। सूरज की किरनें पेड़ों के पत्तों से छनती थीं, सूखे तने पर पड़ती थीं और उछट जाती थीं। तने का एक भाग सूरज के रंग से पीला हो रहा था। यहीं रमेश की आंखें अटकीं। उसने देखा कि तेंदुओं का जोड़ा तने पर बैठा है और मजे से धूप खा रहा है।

रमेश ठिठका। उसने फिर देखा। हाँ, यह तेंदुओं का जोड़ा ही है। तो बाघ ने यह घर छोड़ दिया है? नया घर कहाँ है? रमेश को उसका पता लगाना होगा। वह वन के अधिक-से-अधिक पशुओं पर नजर रखता है। इस बाघ को आंखों से ओझल नहीं होने देगा।

दिन बीतते गये। रमेश वन में घूमा। बाघों के पैरों के निशानों में उसने नये बाघ के पैरों के निशानों को देखा, पर उनका पता नहीं चला। यह एक नई उलझन थी। वह कहां गया? रमेश पहाड़ी से नीचे उतरा। सामने एक छोटी-सी साफ जगह थी।

कई महीने पहले की बात है। तब इस जगह घास

अधिक थी। रमेश पहाड़ी के नीचे की पगडंडी से लौट रहा था। सूरज डूबनेवाला था। अचानक एक सांड की हुंकार उसने सुनी थी। वह मौत को चुनौती दे रही थी। वह कहती हुई जान पड़ी थी कि गाय का बेटा मरना जानता है। वह घुटने टेककर जान नहीं देगा। अरे बाघ तू बन का राजा हो सकता है। पर मैं वह हूँ, जिसने आदमी से पूजा पायी है। और सांड़ की हुंकार के ऊपर उसने सुनीं थी उस बाघ की ऊंची आवाज, वह गुर्राहट जिसे सुनकर, हवा भी थर-थर कांपने लगती थी।
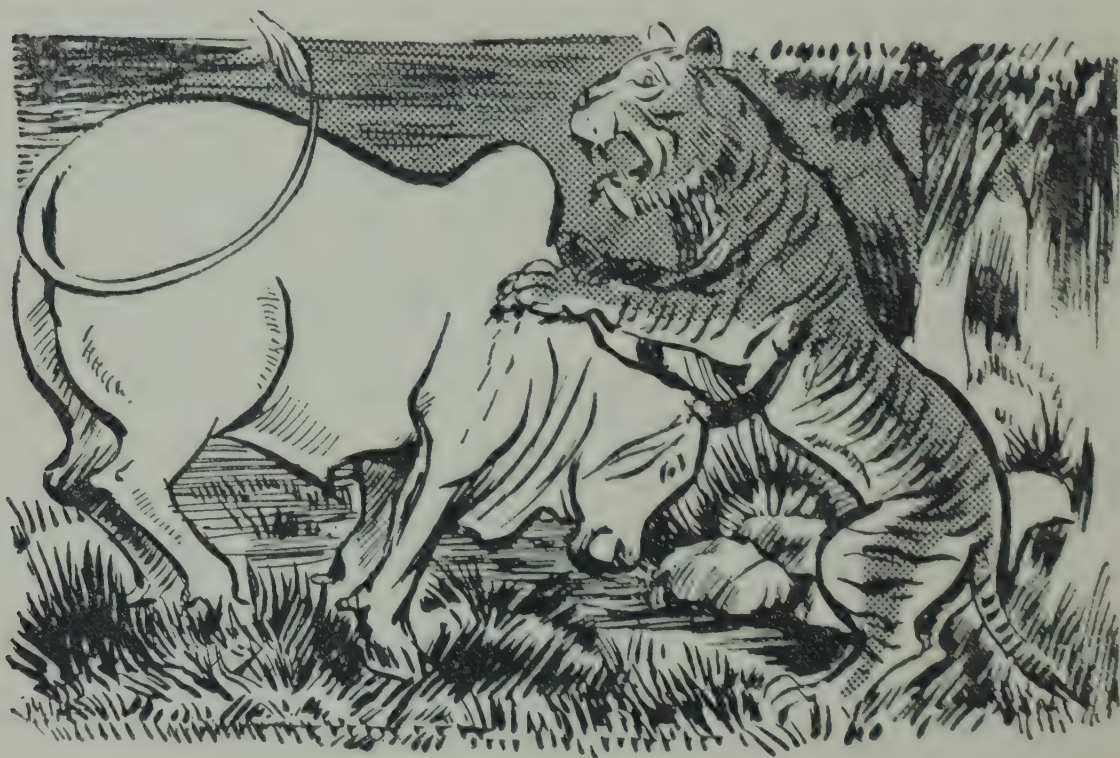
सांड़ जान तोड़कर लड़ रहा था।

वह छुपा रहा। सांड़ और बाघ की आवाज कई मनट तक सुनता रहा। सांड जान तोड़कर लड़ रहा था।

सांड़ काबू में आया, पर तब, जबकि बाघ ने उसके पिछले पैर तोड़ डाले।

रमेश ने आशा की थी कि बाघ अब अपनी मेहनत का फल भोगेगा। सांड़ का गरमागरम मांस पेट भर कर खायगा, पर बाघ ने मार डालने के बाद सांड़ की ओर देखा भी नहीं। वह तुरन्त वहां से चला गया।

अंधेरा हो चला था। रमेश भी वहां नहीं ठहरा। गांव में लौट आया। एक सवाल उसके मन में उठ रहा था। बाघ ने सांड़ को मार कर खाया नहीं। हो सकता है, वह रात में आये और उसे खाये।

रमेश दूसरे दिन उस सांड़ को देखने गया। वह मर चुका था। बाघ ने उसे उसी समय क्यों नहीं खाया? वह वीर था। रमेश ने देखा था कि सांड़ का शरीर दूसरे दिन भी वैसा ही अछूता पड़ा है। बाघ को कुछ हो गया है। उसने इतनी मेहनत से शिकार मारा और उसको खाना भूल गया!

रमेश ने बाघ के पग देखे। बाघ जिधर गया है, खून की बूंदें टपकाता गया। सांड़ से लड़ाई में बाघ घायल हो गया है। रमेश खून की बूंदों के साथ चला। उसके मन में एक आशा थी। वह बाघ को खोजेगा। उसे खोज निकालेगा। वह जानता है कि इन दिनों कोई भी बाघ

मारा नहीं गया है। उसके पग के निशान कहां गये ? वह घायल हो सकता है, बीमार हो सकता है। किसी घनी झाड़ी में पड़ा मौत की राह देख सकता है। रमेश ने बिल बचाकर पैर रखा और सोचा, बुखार से तड़फ कर मरना बाघ के लिए भली मौत नहीं है।

रमेश कांटेदार झाड़ियों के बीच ठहर गया। धरती की छाती में से निकली एक ऊबड़-खाबड़ शिला पर पैर रखा। चारों ओर देखा, कान खड़े किये। बू लेने के लिए नाक में हवा खींची और हवा खींचते-खींचते अचानक रुक गया। इस जगह जोर से ली हुई सांस भी मौत को बुला सकती है। उसने दुनाली पर उंगलियां कसीं।

रमेश ने इसी जगह बाघ का खून पाया था। खून जमा हुआ था, उसमें बाघ के बाल चिपके थे। उसने उनको देखा था। आस-पास की धरती को देखा था और जान लिया था कि घाव बाघ के माथे में हुआ है और बहुत छोटा नहीं है। सांड़ के सींगों ने उसे घायल किया था। इसीलिए वह सांड़ को खाने नहीं गया था। हां, यही वह जगह है। वह यहीं पड़ रहा था। सवाल यह था कि इस समय वह कहां है ?

रमेश अपने ऊपर हँसा। यह ठीक है कि महीनों पहले एक दिन वह बाघ यहां बैठा था। इस समय वह यहां

नहीं है। इस जगह को बार-बार घूरने से उसे बाघ का पता कैसे चलेगा ? उसने शिला पर से पैर उठाया। एक लटकती फूलदार बेल को हाथ से सरकाया, आँख और नाक-कान से देखा और अपना बांया पैर मखमल-सी मुलायम घास पर धर दिया।

रमेश ने नाले की ओर जाते हुए पथ देखे। ताल की ओर जाते पथ देखे। चरती हुई गाय-भैंसों के पास से गुजरा, गुंजान झाड़ियों में आहट ली। पेड़ के तने से चिपक कर घास-लकड़ी की गंध में बाघ को पाने की कोशिश की। जानी हुई मांदों के आसपास चक्कर लगाया। लंबी घासों के हिलने पर नजर रखी। चरते हिरनों को देखा। खरगोश को देखा। सोये सूअरों को देखा। पक्षियों की आवाज पर कान दिया। उनकी उड़ान पर गौर किया और उसे लगा कि बाघ अब इस वन में नहीं है। फिर भी उसने खोज जारी रखने का इरादा किया।

रमेश थक गया था। उसने लंबी पगडंडी नहीं पकड़ी। टीले पर चढ़ा। नीचे उतरा। नाले को पार किया और झाड़ियों के किनारे-किनारे गांव की ओर बढ़ा।

चलते-चलते अचानक ठिठक गया। लगा, आसपास खतरा है। उसका सारा शरीर रक्षा के लिए तैयार हो गया। अपनी उंगलियों को दुनाली पर कस

उसने आँख ऊपर उठाई । पाया, उसके सामने एक गीध है। पेड़ की शाखा पर बैठा एकटक अपने बाईं ओर की झाड़ियों में देख रहा है।

रमेश दबे-पांव सूखी टहनियां बचाता बाईं ओर बढ़ा। झाड़ी के बीच से उसे भैंस के दो सींग दिखाई दिये। भैंस मरी पड़ी है तो गीध उसे खाता क्यों नहीं? जरूर दाल में काला है। वह अधिक सावधानी से आगे सरका। झाड़ियों के बीच से उसने देखा कि एक अधखायी भैंस के पास दो बाघ लेटे हुए हैं।

एक अधखायी भैंस के पास दो बाघ

अपने बाघ को वह पहचान गया । वह अब छोटा बाघ नहीं। उसके कान अब लंबे नहीं हैं। शरीर

पर लाल चमक रहा है और पास सो रही है एक बाघिनी

रमेश ने सोचा, तो यह बाघ बाघिनी को लाने गया था ? यह जोड़ा था। दोनों सोये हुए थे।

रमेश उनको आंख भरकर देख लेना चाहता था। उसने एक डग आगे बढ़ाया। यही गजब हो गया।

डग बढ़ाते ही रमेश खुले में आ गया। गीध ने उसे देखा। घबराकर उड़ा। एक लता से टकराया और बाघों के निकट धरती पर गिर पड़ा।

बाघिनी तुरंत जगी और पलक मारते ही झाड़ियों के ऊपर उछलकर भाग गई। रमेश बैठ गया, दुनाली से तैयार। बाघ जागा और गुर्राया।

और रमेश ने देखा कि बाघ का शरीर बिजली की तेजी से उसके ऊपर होकर निकल गया।

: ३ :

महीने-पर-महीने बीते। रमेश अपना काम-धाम देखता था। बादल घिरते थे। पानी बरसता था। सूरज चमकता था। नये पौधे उगते थे। बेलें फैलती थीं। पेड़ फूलों से सज जाते थे, फलों के बोझ से झुक जाते थे। धरती में घास के अंकुर फूटते थे और उनमें खेलने को नये खरगोश और हिरन पैदा हो जाते थे।

नाले ने शालाओं को काटकर नया पथ बना

लिया। सेमल का पुराना पेड़ आंधी में गिर पड़ा। साल की पहचानी हुई शाखा पर बिजली गिरी। बारहसिंगों के दल का सरदार एक आहट का पता लगाने के लिए गया और मारा गया। नगले के एक घोड़े को तेंदुओं ने फाड़ डाला और रमेश की एक भैंस का सिर ताल से बीस गज की दूरी पर पाया गया।

रमेश वन में घूमता था। पग के निशानों को देख लेता था। एक-दो बार बाघ के सामने पड़ा पर दोनों एक-दूसरे को बचा गये। बाघ वन में घास-लकड़ी काटनेवालों को मिलता था और बचकर निकल जाता था। चरवाहों के चारों ओर घूमता था। इधर कई महीने से उसका पता नहीं मिल रहा था। एक दिन नगले का एक चरवाहा रमेश के पास आया। उसने बताया कि दस मील उत्तर को जो खेड़ा है वहां के किसानों ने मचान बांधकर एक बाघ को मारने की कोशिश की थी। बाघ उस गांव के पशुओं को बहुत हानि पहुँचा रहा था। बाघ मरा नहीं। गोली खाकर मचान के ऊपर झपटा, फिर वन में निकल गया।

रमेश ने सुना कि बाघ घायल होकर भाग गया है। उसका निकल जाना ठीक नहीं हुआ पर जो हो गया सो हो गया। वह जान गया कि खतरा बढ़

गया है। घायल बाघ कुछ मिनटों में ही नगले के निकट आ सकता है। भारी हानि पहुंचा सकता है। उसने दुनाली उठाई। कारतूस की पेटी गले में डाली और मकान के दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया। फिर टीले से नीचे उतर कर देखा कि उसकी पशुशाला खुली पड़ी है। पशु और चरवाहे वन में हैं।

रमेश ने खेड़े से आनेवाली पगडंडी को दूर तक खोजा। उसे एक सेही दिखाई दी। हिरन चरना छोड़कर भाग निकले। दो राही भी मिले, पर बाघ के पग उसे वहां दिखाई न दिये। वह नाले के किनारे-किनारे चला। उसे सूखे चमड़े पर लड़ते हुए गीदड़ मिले। झाड़ी में धूप सेंकता अजगर दिखाई दिया। एक लोमड़ी रास्ता काट गई। पर बाघ के पग ? वे उसे वहां भी नहीं दिखाई दिये।

बाघ के लिए दो ही पथ तो नहीं हैं। वह जिधर चाहे अपना पथ आप बना सकता है। रमेश ने कमर कसी, दुनाली को संभाला और वन में घुस गया।

उसने जंगल छान डाला, पर बाघ का पता न चला। सूरज छुपने को हुआ तो उसने सोचा कि घायल बाघ नगले की ही ओर आये, यह जरूरी नहीं है। उसने तय कर लिया कि बाघ अभी इधर नहीं आया है।

रमेश गांव लौट आया—हारा, थका। उसे बाघ की खोज में मारे-मारे फिरने की आवश्यकता नहीं थी। उसने इतना परिश्रम बेकार किया। यदि एक दिन ठहरा रहता तो बाघ उसके पास अपने-आप चला आता। अगले दिन वह नगले में आनेवाला था।

पहर दिन चढ़ आया था। चरवाहे पशुओं को लेकर वन में चले गये थे। टीले के नीचे एक झरना बहता था। नगले की कुछ लड़कियां वहां बरतन मांज रही थीं। कुछ कपड़े धो रही थीं। यह रोज का काम था। पर दिन में किसी ने कभी कोई भयानक जानवर उस झरने पर नहीं देखा था।

रमेश ने सोचा, घायल बाघ इधर नहीं आया। वह खेड़े से दूसरी ओर चला गया। उसे लगा, एक बोझ उसके सिर पर से उतर गया है। तभी कई लड़कियों के एक साथ चीखने की आवाज उसके कान में पहुंची।

वह उछल पड़ा। दुनाली उतारी, कारतूस गले में डाले और झपटकर सड़क के बीच पहुंच गया। उसने देखा कि लड़कियां झरने की ओर से भागी आ रही हैं। उनके हाथ खाली हैं। कपड़े-बर्तन पीछे छूट गये हैं। उनके चेहरे पर रंग नहीं है। मुंह में बोल नहीं है। रमेश उनकी मदद के लिए आगे बढ़ गया।

लड़कियां उसके पीछे आकर एक क्षण को रुकीं। उनके चेहरों का रंग लौटा, मुख से बोल निकला। सबने डरी आवाज में कहा, "बाघ !"

रमेश ने झरने के किनारे बाघ को देखा। वह लंगड़ा-कर बहुत धीरे-धीरे चल रहा था। उसके कंधे के ऊपर बहुत-सी मक्खियां उड़ रही थीं। रमेश ने उसे पहचान लिया। उसने दुनाली कंधे तक उठाई। बाघ ने रमेश को देखा। दुनाली को देखा। वह भी दोनों को पहचानता था। रमेश ने सोचा था कि बाघ भाग निकलेगा। पर वह भागा नहीं, ठिठका नहीं। वैसा ही लंगड़ाता आगे बढ़ता रहा। मानो कहता हो, ऐसे जीने से मौत भली।

रमेश ने दुनाली कंधे से हटाली। बाघ को दुनाली नहीं, दया चाहिये। बाघ टीले पर चढ़ा आ रहा था। जब उसका घायल पैर धरती पर पड़ता था तो बेचारे वनराज के मुंह से आह निकल जाती थी। रमेश उसके सामने से हटकर एक ओर हो गया। उसे उस गड़रिये के बालक की कहानी याद आ गई, जिसने शेर के पंजे में से कांटा निकाला था। रमेश ने सोचा कि इस बाघ को वह क्या भलाई कर सकता है?

बाघ के आने की बात घर-घर पहुंच गई थी। सब रमेश की दुनाली की दहाड़ की राह देख रहे थे।

पर वह नहीं आई। हां, बाघ नगले के बीच की सड़क पर आ गया। सबने देखा कि वह लंगड़ाकर कठिनाई से चल रहा है। उनके मन में दया उमड़ी तो डर जैसे निकल गया। छोटे-बड़े अपने-अपने दरवाजों पर आकर खड़े हो गये। पर किसी ने भी हथियार नहीं निकाला। बाघ ने भी किसी की ओर नहीं देखा। वह नगले की पूरी सड़क पार करके टोले से उतरा। तैयार दुनाली लिये रमेश उसके पीछे था।

बाघ ने दांये-बांये देखा। रमेश की पशुशाला का दरवाजा खुला पाया। वह उसके भीतर घुसा और जाकर एक कोने में बैठ गया। रमेश ने दुनाली धरती पर टेक दी। अब वह क्या करे ?

जंगल का राजा उसकी शरण में ! रमेश ने तय कर लिया कि वह उसका बाल भी बाँका न होने देगा।

: ४ :

इन बातों को कई बरस बीत गये। इस बीच कई पुराने बाघ मारे गये। कई नये पैदा हो गये। रमेश के बाघ का घाव भर गया था। वह फिर शिकार करने लगा। उसका नाम दूर-दूर तक फैल गया। वह इतना बड़ा हो गया कि बड़ा बाघ कहलाने लगा।

नगले में एक किसान रहता था हरी। एक दिन हरी

दोपहर को घर में आ गया। सब काम-धंधे निबटाये, पर मन न बहला। बातें करने को कोई साथी न मिला तो अपनी पुरानी बन्दूक उतारी। उसे साफ किया, उसमें बारूद भरी और घर से बाहर चल दिया। वह टीले से नीचे उतरा, पशुशालाओं के पीछे घूमा और झरने के किनारे जाकर ठहरा। यहां झरना गहरा और चौड़ा होकर नाला बन गया था और उसकी चौड़ाई में बहुत-सी झाड़ियां उग आई थीं। हरी ने एक बढ़िया झाड़ी नाले के किनारे पर चुनी, बन्दूक धरती पर डाली और उसके पास लेट गया। यहां से नाले का दूसरा किनारा दूर-दूर तक साफ दिखाई देता था।

हरी घास पर लेटा रहा। पशु चरकर लौट आये, दूध निकाले जाने का सुर उसने वहीं लेटे-लेटे सुना। पर एक भी सूअर उसे दिखाई नहीं दिया। अंधेरा होने लगा तो वह तैयार होकर बैठ गया। सूअरों के निकलने का समय हो गया था। उसने बन्दूक को संभालकर पकड़ा और हर आहट पर कान लगा दिये। उसे चाहे रात भर बैठना पड़े, पर वह शिकार लेकर ही घर जायगा। वह बैठा रहा—आहट लेता, आँखें पैनाता, बन्दूक साधता। बहुत देर हो गई। उसकी आंखें थकने को आईं। तभी उसका दिल धड़का। एक काली

छाया नाले के दूसरे किनारे पर हिलती मालूम हुई। उसने आँखें फाड़कर देखा। बन्दूक उठाई, निशाना साधा और घोड़ा दबा दिया। छाया ठिठकी, सूअर लुढ़कता-लुढ़कता नाले में गिरा और झाड़ियों में गायब हो गया।

हरी ने सूअर के पीछे अंधेरे में अकेले जाना उचित न समझा। वह दौड़ा-दौड़ा गांव आया।

वहां से लालटेन और कुछ बल्लमधारी लोगों को साथ लेकर सूअर की खोज में निकला। उन लोगों ने नाले में एक-एक झाड़ी को पीटा, एक-एक झाड़ी में लालटेन दिखाई। पर कहीं कोई सूअर दिखाई न दिया। रात आधी हो गई। वे थक गये और लौट आये।

हरी अपना शिकार इस तरह खोने को तैयार न था। उसे रात भर नींद नहीं आई। दिन निकलते ही उसने फिर साथियों को तैयार किया। रमेश को भी साथ लिया। सब सूअर की खोज में चल पड़े। सूअर गया तो कहां गया? चोट उसके करारी बैठी थी।

खोजते-खोजते उन्होंने देखा कि एक छोटी शिला खून से तर है। मोहन ने झुककर उस खून में से दो बाल उठा लिये। उनको उलट-पुलट कर देखा। आँखें मींच कर देखा। आँखें फाड़कर देखा। बोला "हरी, तेरे सूअर के बाल तो केसरिया रंग के हैं।"

इतने में रमेश आ गया। उसने झुककर जमे हुए खून को देखा। उसमें चिपटे बालों को निकाला। उनको देखा, सूंघा और गंभीर हो गया।

हरी ने पूछा, "क्या बात है, रमेश ?"

रमेश ने हरी की ओर देखा, फिर मोहन की ओर।

हरी ने फिर पूछा, "क्या बात है, रमेश ?"

रमेश हँसा, बोला, "जिस जानवर को तेरी गोली लगी थी वह सूअर नहीं था, बाघ था—बड़ा बाघ।"

सब कांप उठे और सन्न हो गये।

: ५ :

वे गाँव लौटे और रमेश वन में घुसा। उसने सोचा, क्या वह सचमुच बड़ा बाघ था ? वह लौट पड़ा। उसने खून से तर पत्थर को देखा। बालों को परखा और नाले की तलहटी में पगों को खोजा। घंटे भर घूमा तो उसे पगों के निशान मिल गये। उसे अपने अनुमान की सचाई पर अचंभा हुआ। वह बड़ा बाघ था, सचमुच बड़ा बाघ था।

रमेश खड़ा हो गया। बड़ा बाघ घायल हो गया है। खून काफी गिरा है। चोट अधिक आई है। अब यह बाघ जवान नहीं है। बुढ़ापे के निकट है। बुढ़ापे के निकट और घायल ! यदि घाव जल्दी नहीं भरा तो वह आदमी

खाने लगेगा। रमेश आसपास के गांवों में रहनेवाले सब आदमियों को जानता है। वह शिकारी है। कई बार बाघ को निशाने पर पाकर उसने छोड़ दिया है। पर अब कोई मनुष्य मारा जाता है तो उसकी जिम्मेदारी रमेश पर होगी। रमेश ने तय कर लिया कि उसे इस बाघ को मार देना होगा। पर वह मिलेगा कहां?

उसने दुनाली संभाली और झाड़ियों में लौट पड़ा। आगे बढ़ा। उसकी आहट पाकर एक खरगोश भाग गया। गोह धप में से हट गई और गिरगिट पेड़ के तने पर ऊंचा चढ़ गया।

रमेश इंच-इंच वन खोज डालेगा। उसने झुरमुटों में झांका। झाड़ियों के चारों ओर घूमकर गंध ली। राहियों और चरवाहों से पूछा। बाघ का पता न चला।

शाम हुई तो रमेश नगले लौट आया। रात भर सोचता रहा कि बाघ कहां हो सकता है। कई जगहें उसके मन में आईं। दूसरे दिन वह उठते ही घर से चल दिया। सब स्थानों पर देखा। पर बाघ का कहीं पता न था। घर लौटा तो उसकी चिंता बढ़ी हुई थी। इन दो दिनों में बाघ का पता नहीं चला। कोई पशु भी उसने नहीं मारा!

वह सोया, पर उसे चैन न मिला। कभी लगता

कि बाघ किसी मनुष्य को पैर पकड़कर वृक्ष पर से घसीट रहा है। कभी लगता कि उसने मनुष्य के सिर पर से बोझ गिरा दिया है और उसका गला दबोच लिया है। कभी लगता कि वह बैलगाड़ी रोककर खड़ा हो गया है।

वह सो नहीं सका। उठा और दुनाली लेकर नगले की सड़क पर टहलने लगा।

दिन निकला तो रमेश फिर वन में दिखाई पड़ा। ताल के किनारे उसने पगों की खोज की, फिर वह घास के मैदान से नदी की ओर मुड़ने ही वाला था कि उसे झाड़ियों की ओर से भाग कर आता हुआ एक लड़का दिखाई दिया।

रमेश खड़ा हो गया। लड़के ने निकट आकर कहा, "बाघ !"

रमेश लड़के को साथ लेकर नाले की ओर चला। नाले के निकट एक लम्बा गड़हा था। इसके सिरे पर झाड़ियां खतम हो जाती थीं। एक पगडंडी इस गड़हे में होकर नाले के किनारे-किनारे चली गई थी। रमेश गड़हे के दूसरे किनारे पर निकल गया। यहां एक छोटा-सा पेड़ था। रमेश ने लड़के को पेड़ पर चढ़ा दिया और आप पेड़ के तने से पीठ टेककर खड़ा हो गया।

उसने लड़के को एक शाखा पर बैठकर पैर लट-

काने को कहा, ऐसे कि वह रमेश के सिर को छूता रहे। जब बाघ दिखाई पड़े तो वह पैर से रमेश को इशारा कर दे। रमेश अब अपने अनुभव को काम में लाया। उसने गले पर हाथ फेरा, लार से उसे तर किया और तब उस पेड़ के तने के पास से ऐसा सुर उठा जैसे कि बाघिनी बाघ को पुकार रही हो।

दो आवाज निकालने के बाद ही रमेश को बाघ का उत्तर सुनाई दिया। इधर से रमेश बोलता, उधर से बाघ उत्तर देता। इस बीच लड़के ने दो-तीन बार रमेश को इशारा किया, पर रमेश को बाघ दिखाई न पड़ा।

अचानक झाड़ियां खरखराईं। बाघ आ रहा है। हां, बाघ आ रहा है। रमेश जिस अवसर की ताक में था वह भी निकट आ रहा है। रमेश सावधान हो गया। झाड़ियों के बीच बाघ की झलक उसे दिखाई दी। वह लपका चला आ रहा था। वह गड़हे के किनारे झाड़ियों से बाहर आ गया, पगडंडी पर। रमेश ने सोचा था कि खुले में आने पर ठिठकेगा, पर वह रुका नहीं। रमेश ने दुनाली साधी तो बाघ मुड़ा। वह पगडंडी छोड़ रमेश की ओर आया, रमेश के हाथ में बाघ की मौत थी और बाघ रमेश की मौत बना हुआ था।

रमेश शांत खड़ा रहा, बिना हिले-डुले। बाघ ठिठका।

बाघ ने अपना पंजा मारने के लिए उठाया तो उसकी छाती गोली के लिए खुल गई। रमेश की उंगली हिली, दुनाली चीखी और बाघ उछलकर भागा। वह अधिक दूर न जा सका। झाड़ियों के निकट चकराया और गड़हे में लुढ़क पड़ा।

रमेश ने उसके गरम-गरम शरीर को छुआ। कुछ क्षण पहले वह भयानक बड़ा बाघ था। उसने हरी की बंदूक के घाव को देखा। बहुत हलका था। बड़ा बाघ उससे आदमख़ोर नहीं बनता।

रमेश ने उसके गरम-गरम शरीर को छुआ

रमेश को लगा, वह अपराधी है। उसने बाघ के पंजे को देखा तो पता चला कि उसने बाघ से केवल

दो-तीन ही बरस छीने हैं। बाघ बूढ़ा हो गया था। रमेश को लगा वह स्वयं भी पक आया है। पिछले पन्द्रह बरस उसकी आँखों के सामने घूम गये। पगों के वे निशान अब उसे कभी देखने को नहीं मिलेंगे। रमेश से न रहा गया। वह बैठ गया और बाघ के मस्तक पर हाथ फेरने लगा।

●

'मंडल' द्वारा प्रकाशित प्राप्य साहित्य

आत्मकथा	(गांधीजी)	५·००	भूदान-यज्ञ	(विनोबा)	०·२५
प्रार्थना-प्रवचन २ भाग	,,	५·५०	राजघाट की संनिधि में		०·६२
गीता माता	,,	४·००	विचार-पोथी	,,	१·००
पंद्रह अगस्त के बाद		१·५०, २·००	सर्वोदय का घोषणा-पत्र	,,	०·२५
धर्मनीति	,,	१·५०, २·००	जमाने की मांग	,,	०·१२
द० अफ्रीका का सत्याग्रह		३·५०	मेरी कहानी	(नेहरू)	८·००
मेरे समकालीन	,,	५·००	,, संक्षिप्त	,,	२·५०
आत्म-संयम	,,	३·००	हिन्दुस्तान की समस्याएं	,,	२·००
गीता-बोध	,,	०·५०	लड़खड़ाती दुनिया	,,	२·००
अनासक्तियोग	,,	१·५०	राष्ट्रपिता	,,	२·००
ग्रामसेवा	,,	०·३७	राजनीति से दूर	,,	२·००
मंगल-प्रभात	,,	०·३७	हमारी समस्याएं	(१ भाग)	०·७५
सर्वोदय	,,	०·३७	विश्व-इतिहास की झलक		२१·००
नीति-धर्म	,,	०·३७	सं० हिन्दुस्तान की कहानी		५·००
आश्रमवासियों से	,,	०·३७	नया भारत	,,	०·२५
हमारी मांग	,,	१·००	आजादी के आठ साल	,,	०·२५
सत्यवीर की कथा	,,	०·२५	गांधीजी की देन	(रा० से०)	१·५०
संक्षिप्त आत्मकथा	,,	१·००, १·५०	गांधी-मार्ग	,,	०·१२
हिंद-स्वराज्य	,,	०·७५	महाभारत-कथा	(राजाजी)	५·००
अनीति की राह पर	,,	१·००	कुब्जा-सुन्दरी	,,	२·००
बापू की सीख	,,	०·५०	शिशु-पालन	,,	०·५०
गाँधी-शिक्षा (तीन भाग)	,,	१·१२	मैं नहीं भूल सकता	,,	२·५०
आज का विचार (दो भाग)		०·७५	कारावास-कहानी	(सु० नै०)	१०·००
ब्रह्मचर्य (दो भाग)	,,	१·७५	गांधी की कहानी	(लु० फि०)	४·००
गांधीजी ने कहा था ३ भाग		०·७५	भारत-विभाजन की कहानी		४·००
शान्ति-यात्रा (विनोबा)		१·५०	बापू के चरणों में		२·५०
विनोबा-विचार : २ भाग		३·००	इंग्लैंड में गांधीजी		२·००
गीता-प्रवचन	,,	१·००, १·५०	बा, बापू और भाई		०·५०
जीवन और शिक्षण	,,	२·००	गांधी-विचार-दोहन		१·५०
स्थितप्रज्ञ-दर्शन	,,	१·००	सर्वोदय-तत्व-दर्शन		७·००
ईशावास्यवृत्त		०·७५	सत्याग्रह-मीमांसा		३·५०
ईशावास्योपनिषद्	,,	०·१२	बुद्ध-वाणी	(वियोगी हरि)	१·५०
सर्वोदय-विचार	,,	१·१२	सन्त सुधासार	,,	११·००
स्वराज्य-शास्त्र	,,	०·५०	श्रद्धाकण	,,	१·००
गांधीजी को श्रद्धांजलि	,,	०·३७	अयोध्याकाण्ड	,,	१·००

भागवत [illegible]	[illegible]		[illegible]	१·००
श्रेयार्थी जमना[illegible] ,,	६·५०		राष्ट्र[illegible]	०·२५
स्वतंन्त्रता की ओर ,,	४·००		तामिल-वेद (तिरुवल्लुवर)	१·५०
बापू के आश्रम में ,,	१·००		आत्म-रहस्य	३·००
मानवता के झरने (माव०)	१·५०		थेरी-गाथाएं	१·५०
बापू (घ० बिड़ला)	२·००		बुद्ध और बौद्ध साधक	१·५०
रूप और स्वरूप ,,	०·६२		जातक-कथा (आनंद कौ०)	२·५०
डायरी के पन्ने ,,	१·००		हमारे गांव की कहानी	१·५०
ध्रुवोपाख्यान ,,	०·२५		खादी द्वारा ग्राम-विकास	०·७५
स्त्री और पुरुष (टालस्टाय)	१·००		साग-भाजी की खेती	३·००
मेरी मुक्ति की कहानी ,,	१·५०		ग्राम-सुधार	१·५०
प्रेम में भगवान ,,	२·००		पशुओं का इलाज	०·५०
जीवन-साधना ,,	१·२५		चारादाना	०·२०
कलवार की करतूत ,,	०·२५		रामतीर्थ-संदेश (३ भाग)	१·१२
हमारे जमाने की गुलामी ,,	०·७५		रोटी का सवाल (क्रोपा०)	३·००
बुराई कैसे मिटे ? ,,	१·००		नवयुवकों से दो बातें ,,	०·३७
बालकों का विवेक ,,	०·५०		पुरुषार्थ (डा० भगवानदास)	[illegible]
हम करें क्या ? ,,	३·५०		काश्मीर पर हमला	[illegible]
धर्म और सदाचार ,,	१·२५		शिष्टाचार	०·५०
अंधेरे में उजाला ,,	१·५०		तट के बंधन	२·००
ईसा की सिखावन ,,	१·००		भारतीय संस्कृति	३·५०
कल्पवृक्ष (वा० अग्रवाल)	२·००		आधुनिक भारत	५·००
लोक-जीवन (कालेलकर)	३·५०		फलों की खेती	२·५०
साहित्य और जीवन ,,	२·००		मैं तन्दुरुस्त हूं या बीमार	०·५०
कब्ज (म० प्र० पोद्दार)	१·५०		नवजागरण का इतिहास	३·००
हिमालय की गोद में ,,	२·००		गांधीजी की छत्रछाया में	१·५०, २·५०
कहावतों की कहानियां ,,	२·००		भागवत-कथा	३·५०
राजनीति प्रवेशिका	१·००		जय अमरनाथ	१·५०
जीवन-संदेश (ख० जिब्रान)	३·२५		हमारी लोककथाएं	१·५०
अशोक के फूल	३·००		संस्कृत-साहित्य-सौरभ (२३ पुस्तकें) प्रत्येक	०·३७
जीवन-प्रभात	५·००			
कां० का इतिहास ३ भाग	३०·००		समाज-विकास-माला (६४ पुस्तकें) प्रत्येक	०·३७
पंचदशी	१·००			
सप्तदशी	२·००		कृषि-ज्ञान-कोष	४·००
रीढ़ की हड्डी	१·५०		प्रकाश की बातें	१·५०
अमिट रेखाएं	३·००		धरती और आकाश	१·५०

समाज विकास - माला की पुस्तकें

मूल्य प्रत्येक का छः आना

छः आना